

समझ मन मायला रे ,बीरा मेरा
मेलोडी चादर धोय ,
बिन धोया दुख ना मिटे रे ,बीरा मेरा, तिरणा किस विध होय ॥
देवी सुमिरा शारदा रे ,बीरा मेरा हृदय उजाला होय ।
गुरवा के गम के मिल्या रे ,बीरा मेरा आदु आदु अस्त्र होय ॥ 1
समझ मन मायला रे ,
दाता चिनाई कुआ बावड़ी रे ,बीरा मेरा नीर गंगा जल होय ।
हरिजन हरिजन नहा चल्या रे ,बीरा मेरा कई गया मुख मोड़ ॥ 2
समझ मन मायला रे
रोहिड़ो रंग फुटरो रे ,बीरा मेरा फुल अजब रंग होय ।
उबो भिखमी भोम में रे ,बीरा मेरा कलिया ना बिनजे कोय ॥ 3
समझ मन मायला रे
चन्दन रंग को सांवलो रे ,बीरा मेरा मरम ना जाने कोय ।
काट्या कंचन निपजै रे ,बीरा मेरा महक सुंगधी होय ॥ 4
समझ मन मायला रे
तन का बनाले कापड़ा रे ,बीरा मेरा मनसा री साबुन होय ।
ज्ञान सिला पर मार फटकारो रे ,बीरा मेरा सतगुरु देसी धोय ॥ 5
समझ मन मायला रे ,
लिखमो लिखमी भोम में रे ,बीरा मेरा गाँव गया गम खोय ।
तीजी पेड़ी लांघ ज्या रे ,बीरा मेरा चौथी में निर्भय होय ॥ 6
समझ मन मायला रे ,बीरा मेरा मेलोडी चादर धोय ।
हरी का लाडला रे बीरा मेरा तिरणा किस विध होय ॥